© 2013 | International Journal of Scientific Research in Science and Technology
IJSRST | Volume VII | Issue II | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

भारतवर्ष में ''गाय'' के भौगोलिक महत्व का तुलनात्मक एवं विष्लेषणात्मक वर्णन : एक शोधात्मक अध्ययन (कृषि एवं गो–दुग्ध के विशेष संन्दर्भ में)

ओमपाल सिंह
शोध छात्र–भूगोल
मा0 ज्योतिवाफुले रूहेलखण्ड विष्व विद्यालय बरेली

सन्दर्भ :

भारतवर्ष में गाय को मात्र पशु नहीं बल्कि साक्षात जागृत देव एवं माता की संज्ञा प्रदान की जाती है–

यदा सर्वमिद् व्याप्तं जगत स्थावरजग्ऽमम् ।
तां धेनुं षिरसा वन्दे भूतमभव्यस्य मातरम्।।

अर्थात जिस गौ से यह स्थावर जंगम अखिल विष्व व्याप्त है, उस भूत और भविष्य की जननी गौ को मैं सिर नवाकर प्रणाम करता हूँ।

हमारे पूर्वज महार्षियों ने तो अनेक ग्रन्थों में धर्मप्राण मनुष्यों के लिये प्रातः सबसे पहले श्रद्धापूर्वक मंगलमयी गौ का दर्षन लिखा है। गौ–माता को साक्षात् देवी रूप में पूजनीय जानकर सभी प्रकार से उनकी सेवा व सुरक्षा की जाती है। वेदों में यहॉ तक कहा जाता है कि गौ के प्रत्येक अंग में सभी देवों का निवास होता है।

प्रस्तुत शोध पत्र में भारतवर्ष में ''गाय'' के भौगोलिक महत्व का तुलनात्मक भारतवर्ष में ''गाय'' के भौगोलिक महत्व का तुलनात्मक एवं विष्लेषणात्मक वर्णन के साथ ही कृषि एवं गौ–दुग्ध की उपयोगिता का भी शोधात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

Keywords

गोमय, गोराचन, पंचगव्य, पंचामृत, गोधूलि, गो–दुग्ध, गोवंष, गो–घृत, नवनीत (मक्खन), गो–माता, वृषभध्वज, बैदिक साहित्य, संस्कृति, दुहिता, आयुर्वेद, वैतारणी, गौ–ऐषणा।

शोधपत्र :

सर्वप्रथम हम गौ–दुग्ध के गुणधर्म का तुलनात्मक अध्ययन करेगें, तथा गौ–दुग्ध की उपयोगिता के सन्दर्भ में इसके महत्व का विष्लेषणात्मक वर्णन प्रस्तुत करेगें।

''गावादि मंगलानि पष्येत।''

गौ दुग्ध की महत्ता स्वयं सिद्ध है। दूध ही एकमात्र ऐसा पदार्थ है, जोकि सब पौष्टिक दृव्यों से परिपूर्ण है और जिसे हम पूर्ण भोजन कह सकते है। स्तनधारियों में गाय का दूध सर्वश्रेष्ठ बताया गया है, जिसे सभी धर्मो एवं ग्रन्थों ने स्वीकार किया हैं।

गाय का दूध मधुर, स्निग्ध, शीतल, वात–पित्त–कफनाषक फेफड़ो के लिये लाभकारी तथा क्षय रोग को दूर करने वाला होता है, इसके विपरीत भैंस का दूध भारी, गर्म, चिकना, कफ और वायुकारक, आलस्य पैदा

करने वाला, मन्दाग्नि कारक तथा देर पचने वाला है, सामान्यतः अनिद्रा रोग में भैंस का औषधि के रूप में दिया जाता है।

दुग्ध स्रोत्र	पानी	स्नेह पदार्थ (चिकनाई)	शक्कर	प्रोटीन	क्षार
गाय	86.27	4.80	4.78	3.42	0.73
माता (मानवीय)	87.41	3.76	6.29	2.23	0.31
भैंस	82.14	7.44	4.81	4.78	0.83

उपरोक्त आंकड़ो से स्पष्ट है कि गाय और मॉ (मानवीय) के दुग्ध की गुणवत्ता में बहुत कुछ सामान गुण पाये जाते है। गाय के दूध से बने मक्खन व घी में कैरोटिन विटामिन अधिक होता है जो इन पदार्थो के सहज पाचन में सहायक है, जबकि भैंस के दुग्ध कैरोटिन नगण्य होता है।

गाय के दूध को उबालने पर उसकी मलाई में जो पीला रंग आता है वह इसी कैरोटिन विटामिन के कारण होता है, यही कारण है कि गाय के दूध में विटामिन ए, बी, सी, डी तथा ई आदि अनेक विटामिन प्रचुर मात्रा में पाये जाते है।

भैंस के दूध में कैरोटिन की नगण्यता के कारण विटामिन्स बहुत कम होते हैं और प्रभावषाली भी कम होते हैं।

यदि हम गाय और भैंस के दूध उत्पादन क्षमता का अध्ययन करें तो पाते है कि गाय का गर्भकाल 9–10 माह का होता है, और उसके सूखे काल) जब गाय दूध नही देती है, का पालन खर्च भी कम होता है। इसके विपरीत भैंस का गर्भकाल लगभग 12 माह का होता है, और सूखेकाल में पालन खर्च भी अत्यधिक होता है।

गाय दस से ग्यारह मास तक दूध देती है जगकि भैस छः से सात माह तक ही दुग्ध देती है।

गाय, भैस की अपेक्षा कम चारा खाती है तथा भूखे रहने पर भी कुछ न कुछ दूध अवष्य देती है, वह दिन में तीन या चार बार भी दुही जा सकती है, ज्यादा बार दूहने से उसकी दुग्ध उत्पादन क्षमता बढ़ती है।

भैंस, गाय से लगभग दोगुना खाती है, थोड़ा सा भी भूखा रहने पर वह दूध नहीं देती है तथा अधिकतर दिन में केवल दो बार ही भैस को दुहा जा सकता है।

हमारे वैदिक साहित्य में भी गाय की महिमा को बड़े सुंदर ढंग से वर्णित किया गया है–

ऋग्वेद में ''गौ में माता'' कहा गया है, जिसका अर्थ हुआ गाय हमारी माता है। गाय दूहने वाली को वेदों में ''दुहिता'' कहा है, जो पुत्री के लिये पर्यायवाचक शब्द है।

गाय आर्य संस्कृति की पोषक, पुण्य दर्षन तथा दैवी सम्पत्ति मानी गई है, गाय के शरीर पर हाथ फेरने से उम्र बढ़ती है एवं तेजस्विता आती है और खूंटे पर बराबर खाती रहे तो वह सौभाग्य, सौख्य, शान्ति बढ़ाती है।

गौ–वंष वृषभ (बैल) के रूप में साक्षात् मृत्युजंय (मृत्यु को जीतने वाले महादेव जी) की सवारी हैं। गाय की पूंछ पकड़ने पर यह मान्यता है कि वह अथाह जलधारा को पार करा देगी इसलिये वह वैतरिणी पार कराने वाली मानी जाती है, गाय कष्टसहिष्णु जीव है अतः कष्ट सहकर भी कल्याणकारी है। यही कारण है कि आर्य संस्कृति में मृत्यु से पूर्व गाय अथवा बछिया का दान मोक्षकारक माना जाता है।

इसके विपरीत शास्त्रों में भैंस को क्लेच्छ–संस्कृति की पोषक तथा आसुरी सम्पत्ति कहा गया है। भैंस में आलस्य की अधिकता के कारण इसकी संतति भी परिश्रमी नहीं होती अतः पड़वे भविष्य में भैंसे के रूप में कृषि कार्य में उपयुक्त नहीं माने जाते हैं। शास्त्रानुसार, भैंसा अन्तक (यमराज) की सवारी माना जाता है। भैंस की पूँछ पकड़ने से वह जल में नीचे बैठ जाती है, इसलिये वह यमपुरी ले जाने वाली कही गई है।

गौ–ऐषणा (गाय को प्राप्त करने की इच्छा) प्राचीन काल में आर्यो में प्रधानता से होती थी। ऋग्वेद में भी गवेषणा शब्द का प्रयोग हुआ है तथा इसी के अनुसरण पर पुत्रऐषणा (पुत्र की इच्छा), दारैषणा (स्त्री की इच्छा), वित्तैषणा (धन की इच्छा), आदि अनेक शब्दों की सृष्टि हुई।

धीरे–धीरे गो–अन्वेषण का सामान्यतः ''मूल्यवान का अन्वेषण'' अर्थ बन गया क्योंकि आर्यो के लिये गायों से अधिक मूल्यवान कुछ नहीं था। मानव जैसे–जैसे जड़ से अजड़ (चेतन अत्मादि) के सम्मुख होता गया, वैसे–वैसे तत्वज्ञान भी मानव के लिये मूल्यवान होता गया। अतएव गवेषणा का जो अर्थ पहले था–गौ रूपी धन का अन्वेषण वह तत्व–अन्वेषण के रूप में भी प्रयोग होने लगा।

गौ के प्रष्वास (नथुनों द्वारा छोड़ी गई वायु) में कृमि नाषक शक्ति मानी जाती है, अतः जिस घर में गौ रहती है, वहॉ अनेक प्रकार के रोग कीटाणुओं का सहज ही अभाव बना रहता है।

यद्यपि भैंस के दूध में गाय के दूध की अपेक्षा अधिक मलाई पड़ती है, जिससे घी व मक्खन का उत्पादन अधिक होता है तथापि इसमें गाय के घी एवं मक्खन के समान गुणवत्ता में कमी रहती है।

अर्थात जिस प्रकार स्वर्ण भस्म अत्यंन्त अल्प मात्रा में भी थाली भर दाल–भात से श्रेष्ठ है इसी प्रकार गो–घृत एवं नवनीत (मक्खन) भी अल्प मात्रा में ही भैंस से प्राप्त बहुत मात्रा में घी व मक्खन से श्रेष्ठ है।

आर्युवेद में गो–दुग्ध को बुढ़ापे के सब रोगों का नाष करने वाला बताया गया है–

''जरासस्तरोगाणां शान्तिकृतसेविनां सदा''

सुश्रुत के अनुसार–बकरी के दूध में भी प्रचुर मात्रा में गुण पाये जाते हैं, तथा इसमें लगभग गो–दुग्ध के समान ही गुणधर्म बताये गये हैं, परन्तु इसमें दीर्घकालीन हानि यह है कि जिन बच्चों का पालन पोषण बकरी का दूध पिलाकर किया जाता है, भविष्य में (युवावस्था) में उनके स्वेद (पसीने) से दुर्गध की मात्रा अधिक पाई जाती है।

गाव्यतुल्यगुणं त्वाजं विषेषाच्छोषिणां हितम्।
दीपनं लघु संग्राहि श्वासकासास्रपित्तनुत् ।।
अजानामल्पकायत्वात् कटुतिक्तनिषेवणात्।
नात्यम्बुपानाद् व्यायामात्सर्वव्याधिहरं पयः।।

(सुश्रुत)

(गाव्यतुल्यं गुणं त्वाजं) अर्थात बकरी के दूध में भी गौ–दुग्ध के समान ही गुण होते हैं। क्षय रोगियों के लिये यह विषेष रूप से लाभकारी है, यह जठरग्नि को दिप्त करने वाला (पाचन शक्ति) बढाने वाला, हल्का, दास्त को बांधने वाला तथा दमा, खासी तथा रक्त–पित्त का नाष करने बाला होता है।

बकरियो का शरीर छोटा होता है, वे कड़वा व तीखा खाती हैं, जल कम पीती हैं, चलती–फिरती भी अधिक हैं इससे उनसे प्राप्त दुग्ध व्याधियों को हरने वाला होता है। उपरोक्त गुणो के परिपूर्ण होते हुये भी स्वेद का दुर्गन्धपूर्ण हो जाने एवं शरीर में वास आने के कारण गाय का दूध ही सर्वश्रेष्ठ कहा गया है–

गवां क्षीरं पषस्यते

अर्थात गो–दुग्ध, बकरी के दूध से श्रेष्ठ है। इसी प्रकार सभी स्तनधारी प्राणियों जैसे उष्ट्र, गधी, घोड़ी, भेड़ बकरी आदि के दुग्ध से गौ–दुग्ध ही सर्वोत्तम एवं सर्वश्रेष्ठ बताया गया है।

यदि हम गौ–दुग्ध से बने पदार्थो का अध्ययन करें तो पाते है कि आयुवेद में गाय के दही को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है–

गो दध्नामषेषाणां मध्ये गव्यं गुणाधिकम् ।।

इसके अतिरिक्त गाय का नवनीत (मक्खन) तो बच्चों के लिये अमृत तुल्य बताया गया है–

तदृितं बालके वृद्धे विषेषादर्मृत षिषोः।।

गय का घी विषेषकर नेत्रों का हितकारी, वीर्यवद्धक, त्रिदोषनाषक, मेघा, लावण्य, कान्ति, तेज, ओज आदि की वृद्धि करने वाला पवित्र आयुवर्द्धक रसायन है।

आयुर्वेद ने तो ''सर्वाज्येसषु गुणाधिकम् ''अर्थात सब घृतों में अधिक गुणकारी है, ऐसा लिखकर इसे अत्यन्त श्रेष्ठ पृथ्वी का अमृत ही सिद्ध किया है।

गाय का वर्षो पुराना संभाल कर रखा हुआ घी किसी भी प्रकार की चोट के लिये अमोघ औषधि का कार्य करता है। आयुर्वेद में गौ–दुग्ध का वर्णन निम्नांकित प्रकार से किया गया है–

गो क्षीरमर्नाभष्यन्दि स्निग्धं गुरू रसायनम् ।
रक्तपित्तहरं शीतं मधुरं रसपाकयीः।।
जीवनीयं तथा वातपित्तघ्नुमं परमं स्मृतम।।

अर्थात गाय का दूध, दस्त को बांधने वाला, स्निग्ध (चिकना), भारी, औषधगुण सम्पन्न, रक्तपित्त का शमन करने वाला, शीतल, स्वाद और परिणाम में मधुर, जीवन बढ़ाने वाला और वात–पित्त के विकारों को नष्ट करने वाला कहा गया है।

गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरित मानस में सतयुग में भगवान विष्णु का श्रीरामचन्द्र जी के रूप में अवतार लेने का एक कारण गौ रक्षा भी बताया गया है–

जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिधुंसुता प्रिय कंता।

(बालकाण्ड)

द्वापर युग में भगवान विष्णु ने श्रीकृष्ण अवतार में गो–पालक के रूप में ग्वालों के बीच रहकर गो–रक्षा की अलख जगाई। यद्यपि उनका जन्म क्षत्रिय वंषीय, वासुदेव–देवकी की संतान के रूप में हुआ था, परन्तु उनका बचपन ग्वाल वंषीय, नंद यषोदा के घर पर उनके पुत्र के रूप में व्यतीत हुआ, जहॉ नन्हें कान्हा की ग्वालों एवं गो–वंषीयों के साथ मनोहारी बाल लीलायें सारे जगत में प्रसिद्ध है–

खेलत मदन सुंदर अंग।
जुबति जन मन निरखि उपजत बिबिध भांति अनंग।
पकरि बकरा पूँछ ऐंचत अनि दिसि दिसि बरजोर।
कबहुँ बच्छ लै भजत हरि कों जुबति जन की ओर।
अति अलौकिक बाललीला क्योंहूँ जानि न जाय।
मुग्धता सों महारस सुख देत रसिक मिलाय।।

गो–सेवा के कारण ही श्री कृष्णचन्द्र को ''गोविन्द'' कहा जाता है।

गौ–दुग्ध की महिमा का वर्णन वेदों में इस प्रकार वर्णित है–

अनु सूर्यमुदयतां हृद्द्योतो हरिमा च ते।
गो रोहितस्य वर्णेन तेन त्वा परि दहमसि

(अर्थववेद)

अर्थात सूर्योदय होते ही तेरा हृदयदाही रोग और पाण्डु रोग दूर हो जाये। लाल वर्ण की गौ के रंग से तुझे हम घेरे रखते है।

उपर्युक्त मन्त्र से यह सिद्ध होता है कि लाल रंग की धातु में रखे दूध, दही और घी आदि के सेवन से हृदय रोग तथा पाण्डुरोग दूर होते है।

अग्निपुराण में गो महिमा का इस प्रकार वर्णन किया गया है–

गावः पवित्रा मांगल्या गोषु लोका : प्रतिष्ठिता।

(अग्नि पुराण)

गोऍ पवित्र एवं मंगलदायिनी हैं, समस्त लोक गौ में ही प्रतिष्ठित हैं। गायों का गोबर और मूत्र परम श्रेष्ठ है। गोबर, गौमूत्र, गो–दुग्ध, दधि, गो–घृत और गोरोचन–इस षडङ्ग का पान श्रेष्ठ है और दुःस्वपन आदि दोषों का नाषक है। गोरोचन, शत्रुओं और विष का नाष करने वाला है। गौ को ग्रास देने से मनुष्य स्वर्ग में जाता है, यथा–

नमो गोभय : श्रीमतीभयः सौरमेयीम्य एवं च ।
नमो ब्रहासुताभयष्च पवित्राभयों नमो नमः ।।

(अग्नि पुराण, पाठ–292)

गायें नित्य सुरभि (सुगन्धपूर्ण) हैं, गायें ही देवताओं को परम उत्कृष्ठ हवि प्रदान करती है, गोघृतादि हवि मन्त्रपूत होकर स्वर्ग में देवताओं को तृप्त करते हैं और ऋषियों के अग्निक्षेत्र और होम में गाय से ही सहायता मिलती है। गौऍ स्वर्ग की सीढ़ी, सनातन और धन्य है, मै श्रीमती (लक्ष्मीस्वरूपा), ब्रहापुत्री और पवित्रा गौओं को बारम्बार नमस्कार करती हूॅ।

कालीदास ने रघुवंषम् में वर्णन किया है कि सूर्यवंषीय महाराज दिलीप जब पुत्र कामना से कुलगुरू वषिष्ठ के पास अपनी दुःख गाथा वर्णन करने गये, तब महार्षि ने उनको स्त्री के साथ गौ–माता की सेवा करने का उपदेष दिया –

सुतां तदीयां सुरभे : कृत्वा प्रतिनिधिं शुचि :।
आराधय सपत्नीक : प्रीता कामदुधा हि सा।।

(रघुवंषम्)

महाराज दिलीप, रानी सुदक्षिणा के साथ भक्तिभाव से नन्दिनी गो की सेवा में लग गये, इसके बाद माया के सिंह का नन्दिनी के ऊपर आक्रमण करना आदि कथा सभी जानते है। फलस्वरूप गौ आषीर्वाद से उन्हें ''रघु'' पुत्र के रूप में प्राप्त हुये। कालान्तर में इन्हीं के वंषज अज–दषरथ –श्रीराम हुए।

गाय से गोरोचन जैसे सुन्दर पदार्थ तथा पंचगव्य एवं पंचामृत जैसे सुमधुर एवं सुपाच्य पेय होते हैं, जिनसे यज्ञ, प्रायष्चित, प्रक्षालन आदि दिव्य कर्म सम्पन्न होते हैं।

कृषि कार्य में भी गाय से अधिक उपयोगी अन्य कोई जीव नहीं है। गोमय (गोबर) तथा गौ–मूत्र को सर्वश्रेष्ठ खाद बताया जाता है।

गाय की कृषि कार्य में निहित उपयोगिता को स्पष्ट करने के लिये हम गोमय तथा गोमूत्र रूपी खाद की उपयोगिता का विष्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत है–

गाय का गोबर विभिन्न प्रकार के अनाजों के लिये एक उत्तम खाद है। गाय के गोवर को घर में लीपने पर घर कीटाणु मुक्त रहता है एवं वायु को शुद्ध करता है। गोमय एवं गोमूत्र अमोघ औषधि का कार्य भी करते हैं। इसके विपरीत भैंस का गोबर तम्बाकू के लिये उपर्युक्त खाद हैं, तथा भैंस मूत्र विष तुल्य है।

प्राचीन काल से ही गाय के बछड़े भविष्य में बैल के रूप में कृषि कार्य के उपर्युक्त होते हैं, वर्तमान में यद्यपि कृषि कार्य के लिये भूमि की जुताई मषीनों द्वारा की जाने लगी है, तथापि हल द्वारा जोती गई भूमि अधिक उर्रवरक पायी जाती है, तथा मषीन से जोतने पर भूमि की उर्रवरक क्षमता घटती है।

गाय एंव उसकी संतती तेज, चैतन्य तथा परिश्रमी होते है, प्राचीन काल में बैलगाड़ी परिवहन का भी एक प्रमुख साधन होती थी।

शास्त्रों के अनुसार–''**लक्ष्मी मूत्रे पुरीषे तथा**''।

अर्थात गौ के गोबर–मूत्र में साक्षात् लक्ष्मी बस्ती हैं। सत्य ही है, लक्ष्मी न बसती तो इस खाद से होने वाला असीम लाभ कहॉ से दिखाई देता ! इसीलिये कहा जाता है कि गाय के थन में सरस्वती और गोबर मूत्र में लक्ष्मी बसती हैं। गोबर को गोमय भी कहते हैं, क्योंकि उसमें गौ की विषिष्टता–गोमयता भरी हुई है। आरोग्य और आयुर्वेद की दृष्टि से देखें तो भी गोमय में अनेक औषध सम्बन्धी रासायनिक तत्व भरे पड़े हैं।

महाभारत में एक कथा प्रचलित है–लक्ष्मी जी ने गाय से उसके शरीर में स्थान पाने की विनती की, सब देवताओं को योग्यतानुसार गो–विराट में स्थान मिल गया था, लक्ष्मी को कहॉ स्थान दें ? गौ माता ने कहा कि तुम अति चंचल और चपला हो, तुम्हें कौन सा स्थान दूँ ? तुम मेरे गोबर व गौमूत्र में निवास करो–

अवष्यं माननना कार्या तवास्माभिर्यषस्विनि।
शकृन्मूत्रे निवस त्वं पुण्यमेतद्वि न : शुभे ।

(महाभारत अनु0 82 /24)

इस प्रकार लक्ष्मी ने गोमय एवं गोमूत्र में स्थान प्राप्त किया। लक्ष्मी जी का सदुपयोग शीघ्र कर लेना चाहिये, नहीं वह चपला न जाने कहॉ–कहॉ चली जाती है। खाद बनाने में भी इसी सत्य का पूरा उपयोग करना पड़ता है। गोमय और गोमूत्र के वायवीय भाग में अधिकतम लक्ष्मी तत्व अर्थात लाभदायी पोषण तत्व रहता है, द्रव भाग में इसमें कम और ठोस भाग में बिल्कुल कम।

कृष्ण का एक अर्थ कृषि करने वाला भी होता है, अतः भगवान कृष्ण, गोमय को पृथ्वी में कृषित कर भूमि की भी सेवा के कारण गोपाल कहलाये न कि धेनुपाल। क्योंकि भगवान कृष्ण ने गाय और पृथ्वी दोनों का पालन एक साथ कर दिया तथा मिश्र खेती की नींव डाली इसलिये वे गोपाल कहलायें।

गोविन्दाय नमस्तस्मै गोपालय नमो नमः।

गोबरमूत्र रूपी लक्ष्मी देवी एवं धरती रूपी भूदेवी इन दोनों बहनों का संयोग होगा तभी वैभव रूपी विष्णु भगवान प्रसन्न होगें और दरिद्रता का नाष होगा।

निष्कर्ष :

सुश्रुत संहिता में गाय का दूध ही सर्व श्रेष्ठ बताया गया है–

गव्यगाजं तथा चौष्ट्रमाविकं महिषं च यत।

अष्वायाष्चैव नायष्चि करेणूनां च यत्पयः।

(फड़के और साठे द्वारा सम्पांदित सुश्रुत संहिता

अनुवादित भाग–1 1921 बम्बई)

गौ–दुग्ध, गाय, बकरी, ऊॅटनी, भेस, भेड़ घोड़ी तथा हथिनी के दुग्ध से श्रेष्ठ होता है। भारतवर्ष में एक कृषि प्रधान देष है, गाय भारतवर्ष के शरीर की रीढ़ तथा किसानी की कुॅजी है। वर्तमान मषीनी युग होने के बाबजूद भी गरीब किसानों की खेती का सहारा ''बैल'' ही हैं, बैल के बिना कृषकों का काम नहीं चल सकता और यह अनुभव सिद्ध है कि उसके स्थान पर भैसा किसानी और लदनी आदि के काम नहीं कर सकता, इसलिये गाय को ही पालना और और बढ़ाना अच्छा है क्योकि वह भैस से कम खती है और अधिकॉषतः भैंस से की अपेक्षा अधिक दिनों तक जीवित रहती है, तथा उसके बछड़ा भी उपयोगी होते हैं।

उपर्युक्त विवेचन को पढकर किसी के मन में विचार उत्पन्न हो सकता है''इस प्रकार तो आप केवल गाय की उन्नति करना चाहते हैं। आपका यह प्रयत्न ऐसा ही है एक को डुबोकर दूसरे को उबारना, आपके इस प्रयत्न से भैंस, बकरी आदि का तो सर्वनाष हो जायेगा।

ऐसे विचारों के उत्तर में महात्मा गॉधी के शब्द ही यहॉ उद्धत कर देना उचित रहेगा–'' अगर हम गाय को बचा सके तो भैस आदि भी बच जायेगी। क्योंकि भैंस को अधिक संरक्षण की आवष्यकता नही होती है, गाय को जरूरत होती है। इस प्रकार यदि हम गाय को संरक्षित कर पाये तो भैस आदि स्वतः संरक्षित हो जायेगी। अतः कहा जा सकता है कि

गावः प्रतिष्ठा सचराचरस्य

अर्थात गायें ही चराचर विष्व का आधार हैं। अतः स्पष्ट है कि भारतवर्ष में गो–दुग्ध एवं खाद की उपयोगिता देखते हुये इसका भारतवर्ष के संदर्भ में भौगोलिक महत्व स्वयंसिद्ध है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अभयदान पत्रिका, जीव दया मंडली, बम्बई द्वारा प्रकाषित।
2. गो–संताप कल्पना–जीवरक्षा मण्डली, हैदराबाद द्वारा प्रकाषित।
3. गोरोचन एक दिव्य पदार्थ माना जाता है, जो मृत गाय के मस्तक से प्राप्त किया जाता है, जिस प्रकार अल्प संख्या में हिरनों में कस्तूरी पायी जाती है। उसी प्रकार हजारों में किसी एक गाय के मस्तक पर दोनों भौहों के बीच में एक प्रकार का पदार्थ एकत्र होता रहता है, यह पदार्थ जीवन भर एकत्र होकर एक पथरी जैसा रूप ले लेता है, गाय के मृत हो जाने पर चमड़ा निकालने वाले इस पदार्थ को निकाल लेते हैं। अध्यात्म की दृष्टि से गोरोचन का विषेष महत्व है, इसे मनोकामना सिद्ध, सम्मोहन, रोगनाषक तथा पूजा पद्धति में प्रयोग में लाया जाता है।

4. पंचगव्य, गाय से प्राप्त होने वाले पॉच पदार्थो –गोमूत्र, गोमय, दूध दधि तथा घी को मिलाकर बने पदार्थे को कहते हैं। इसे शरीर के शुद्धिकरण, प्रायष्चित तथा रोगनाषक के रूप में ग्रहण किया जाता है।
5. गौ–पुकार गौ–, सेवक प्रेस, बम्बई द्वारा।
6. अग्निहोत्री गंगाप्रसाद, गायों का पालन एवं उनसे लाभ।
7. गुप्त द्वारिका प्रसाद, गोकुल गाथा।
8. शर्मा श्रीराम, हमारी गायें, विषाल भारत बुक डिपो।
9. दुग्ध चिकित्सा, हिंदी ग्रन्थ रत्नाकर बम्बई।
10. मुंषी प्रेमचन्द्र–गोदान।
11. पाण्डेय राम लग्न, श्रीषिव महापुराण वैवस्क्त मनु के सूर्यवंष का वर्णन, पाचवीं उमा संहिता, सावित्री ठाकुर प्रकाषन वाराणसी।
12. पंचामृत–गो–दुग्ध, गो दधि, मधु, मेवा, तुलसीदल इन पॉचों को मिला कर बनाया जाता है जोकि पूजन में प्रयोग किया जाता है। इसे बनाने के लिये गो–दुग्ध को गर्म नहीं किया जाता है।